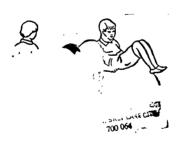


### गळी रा लाडैसर

राजस्थानी में टाबरां री कहाण्यां



याबुस प्रकाशन नेहरू घोक, शीतमा गेट थोकानेर (साप्र०) च श्री लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत

मूत पूर्व सांसद



लक्ष्मी निवास D—194 बनी पार्क बद्युर 302006 दिनांक 6-3-89

10693

साज स्रोपको भागह भागा में हाबरों गांव पोय्कों से पही पाडना है। बाळ माहित्य निराणी बोर्ड होगों बाम मी है। हाबर पर्वि मू पढ़ें, ममर्थ, सर उत्ता सं बाया मनों मार्थ साध्या सरवार जमें। ऐसी माहित्य ही दुन्दवसी होवें।

हाउँ से भोरो एक वृक्षेत्र दावर्ष तार निर्देशो क्षेत्रो है। दिला है बहिते मुन्द से खातारी से साथ, धार्थाणी कौती वृक्ष्या, मुनद नार जैस धर धानारा से भावता हावस्त है बादी नहीं माने साथ जनावा धर सम्भावा से बादी वृक्ष धार्यो करन है।

हाए से लेगर समृत गरीय गयन भी ने म्हारी देवाही है वे हाल जात है। योग्या बार्ड है तिमता हैयें। वहां ने गायबादी दिने वा म्हारी मुख बायता है।

#### राजस्यानी माया साहित्य एवं संस्कृति झकादमी बीका<sup>नेर</sup>्रै मोशिक मार्थिक सहयोग मूं प्रकासित

© अब्दुल वहीद कमल

प्रकाशक बाबुल प्रकाशन

बीकानेर

प्रथम संस्करण 1989 मोल—12, रिपिया आवरण—स्वामी ग्रमित चित्र-ग्रासकरण गोस्वामी

> मुद्रक कल्याणी प्रिन्टर्स बीकानेर

ALEE RA LADESAR-RAJASTHANI STORIES FOR CHILDRES

By ABDUL VAHEED KAMAL PRICE Rs. 12. 00 ONLY.

म्हारै हिवड़ै रा हार, म्हारै काळजै रो कोर

डिम्पल, सोन्, कबीर श्रर सोयव रै सागै-सागै

स्हेरां ग्रर गावां री गळयां रै उसा लाडैसर

टाबरां नै मोकळै हेत सुं आ पोथी सौंपूहं

जिका बडा होय'र म्हारी जुसी संस्कृति री

रिछपाल करेला।

लेलक---

#### म्हारा दो बोल–

हेत कर्यां हेन हुवै, हुवै जोग संजोग। खारी बोलै मावड़ी, मोठा बोलै लोग।।

इए पोथी री कहाण्यां मांय जे की खारा वोल भी है तो वे म्हां खातर घरणा ई मीठा है। क्यूं क ऐ कहाण्यां म्हारी मायड़ भावा राजस्थानी में लिखिज्योड़ी है। जिकी भाषा मिश्री दांयी मीठी है, दूध दांयी घोळी है ब्रर ब्रमृत दांयी गुराकारी है। ऐड़ी मायड़ भाषा ब्रर संस्कृति मार्थ म्हां राजस्थान्यां नै घरणो ई गर्व है।

जे ऐ कहाण्यां म्हारै छोटै-छोटै टावरां नै पढणे में आछी लागैली तो म्हारो लिखणो सार्थंक हुवैलो । श्रर जे इएा कहाण्यां रै पढणे सूं वां नै राजस्थानी रै दूजे ठावा चावा तेखकां री कहाण्यां पढणे रो चाव लागेली तो मायड़ भाषा राजस्थानी रो मोकळो वधेपो हुवैलो ।

#### इण पोथी री कहाण्यां मांय सू

कूंपळ — परती मांरी रिष्ठपाळ सार, दुनियां रेस गळँबच्चांरो झो हेती है क परती मांरो रूप मी बिगाड़ी। घे तो दुनिया देखती। पए म्हांछोटी-छोटी जंबली कूंपळाने भी दुनिया देखताद्यो। दला स्नातर बस बरणावस्या बद करो। दुनियाँ रैटावर्गपर दया करो। नी तो लासाफ चेतावाणी है क

> जिको खाई स्रोदेनौ, बो खाई में गिर जावैलो । जिको घरती मा नै मेटोलो, बो घरती मूंमिट जावेलो ।।

बटाक जे म्हारी जूबी पोडी इस मांत साप रेदेस री सम्कृति ने जास ले से तो साज साथों ने सत रेमारग सूंकोई कोनी डिया सकें। पस एक सस्कृति सांवर्सों देस री धोर है क साप सूब के रो केवसी सानस्कों वाई में। इहें सूबी-बडेरो होवर्सी रेनाल सा केवसी चाजू हुक जद तूं इस ने रात माई केय दिया यर सो तर्न माई केय दियो तो सब में माई हो। सर माई साई से समझें, गाव साटर, देस सातर सरसमाज सातर साफ़ो कोनी हुई .....

गळी रा सार्डसर— वा देल्वो, क एक पायस्योड़ी बकरी दो तीन छोर्ट छोर्ट कुरूर्या ने जुंगाय रेसी हो। बकरड़ी ने नुकर्या सातर पायस्योड़ी देखेर प्रापी योडी देर सातर प्राप रो आपी भूत्यी। जद वा आप रे प्राप् नाम प्रार्ट तो भी रेहिवई रो भत्तत, मा रो मयता मूं छळक उदयो। या सोच्यो जद एक बररो हुत्ती रे जायोड़ां नुकर्या ने देव'र माप रो दूप पाय गई है तो महे एक मिनल रे जाये ने कोनी पाल सर्टू...



कूंपळ-- ६ बटाऊ-- १६ गळी रा लाडंसर-- ३१

# क्रूंपळ

यागली बस्ती रै बीचो-बीच एक नीम रो पेड है। घ्रो पेड नामू रो नीम रै नाम मूंजाणी जे है। लाभू नै मर्था चळीम बरम होयग्या। लाभू रै कोई ग्रीलाट कोनी हो। पण् बो एक नीम रोपेट नगार ग्रमर होयग्यो। ग्रमै, जद ताई ग्री नीम रो पेड रेयमी लाभू रो नाम चलनो ई रेयमी।

लाभू रो क्रो नीम, बस्ती री धल्लाली बाला मुल्को रेबो है। घो कितराई पत्तभड़ देख्या घर कितरा ई दयन गुजार्या है। इस रे नीचे बस्ती री पंचायत भेळी होयांद कितरा ई स्पेटा-च्या फैनला कर्या है। इस रो छापों में बस्ती रा टाबर भेरवा है, कृद्या है। घर छोड़े मूं बड़ा हुना है।

हमा नीम रे नीचे धनजो सेठ रो देहो दोन्, धर दोन पहने में देश कम्मू सेत सेने को वदर प्राप्त में लई। कम्मू धर दान रो भाईको चला समग्री दस्ती रा सोग खार्स नर्वा जू जारी। से दोन विवसी धार्टर प्राप्त करी भार पर जूं नार्थ धार्थ। तीम सी साथा तीचे बेठेर बारा सा नृहता तेथे धर सेता सामित्या करें। ग्राज!

. लाभू रै नीम रै नीचे, कम्मू पैली आय'र बैट्ग्यो । वो उदास मर्ग कीं सोचो हो । योड़ी देर में दोनू भी आग्यो । परा कम्मू सुद-बुद सी होयाँ चुपचाप बैठ्यो हो । कम्मू रै कन्नै दोनू कद आयो इरा रो वीं नै बिहुँ ई भान कोनो हुयो, बो तो जियां हा बिया ई बैठ्यो रैयौ ।

कस्मूरी चुप्पो नै देस'र दीनू बीं कानीं ताकती रेर्या ···· तक रेर्या । पछ दीनू चाएाचको बोल्यो, ''कस्मू ··· ।''

कम्मू चमकप्यो । श्रर उएा रै होठां पर सूकी मुळक छितरगी । पण, ' छिएा रो श्रा मुळक, धीरै-धीरै सुकड़तो चली गई । इए। बीच दोनां री श्र ग्रामनै सामनै टकरी । श्रर देखतां ई देखतां कन्मू जदास होग्यो । बो र्ड री दुनियां में पूठी डूबग्यो ।

दीनू बोल्यो, "कम्मू । तूं कद श्रायी ?"

"म्हें .....", वम्मू श्रागे की कोना बोल्यो ।

दीनू कम्मू नै चर्चड़ र पूछ्यो, "कम्मू, वता तो सई, तु कद आणे

पण कम्मू ग्रवैभो चुप हो।

े दीनू घीरज मूं कम्मू नै पूछ्यों, "वारो श्रव्या तन्त्रे मारखी औं >

या धारी श्रम्मी तन्नै रोटी कोनी दी ?" दीनू वीं नै बार-बार पूछतो रेयौ । पग् कम्मृटस नूं मस कानी हयी।

दीन हळकी सी रीस में वोल्यी, "जे अवके पूर्किने वतावेली तो म्हें भो म्हारै घरै जावू हूं बर बाज सूँ बावां थू माईलूम्ही है

पराकम्मृतो फेर भी कोनी बोरवी।

दीनु बाप रै हाथ री मुट्टी भींच'र मुडै माथै राख'र--थू-थू कर'र जावगा लाग्यो । इतरै में कम्मू दीनू रौ कुड़ती पकड लियी । अर कागज रै ठूनै दायी फीसम्यौ । को फूट-फूट'र रोवतौ-रोवतौ, सुबक्यां भरतौ-भरतौ

बोहर्या." नी ः नी ः दीनुः चूं मन्नै छोड'र मत जा। ः नूं ं मनै छोट'र मत जा। म्हारो दुनिया में कोई कोनी है।"

दीनू कम्मू री झांल्यां रा झांपू पुछ्या । फैर गळगळी होय'र बोर्ल्या, "कम्मू रो मत ः कम्मू रो मत, यार ! म्हनै बतातो सई ःःः। हुयौ वर्गई ?"

कम्मू सुवक्षां भरती-भरतौ बोल्यो 'दीनू ! म्हारी ग्रम्भी म्हारी ट्र माईमां है। श्रातो तूं जाणै ई है। श्राज बाम्हारै श्रय्यानै म्हारी इतरी चुगली खाई क म्हारो अव्या मनै व्होत मार्यौ । श्रर मनै रोटी भी कोनी રી ા"

बीनू पूछ्यी, "परम बयूं ?"

15

हेसर् ।

कम्मू बतायो, "म्हारी श्रम्मी, श्रब्वा नै चुगलो खाई क श्रो हरा जादो, कारखाने कोनी जावै श्रर सगळै दिन गळ्यां में रूळतो फिरै।'

दीनू केयो, ''तो यार तूं कारखाने क्यूं कोनी गयो ?''

कम्मू बोल्यो, ''दीनू, म्हें गलोचां रै कारखाने मांय काम करतो हो।

परा दो तीन दिन पैलो राज रा श्रादमो भाया । कारखाने र वावू ने कंगे क दस बारा वरसां सूं छाटी उमर रै छोरी छोरां नै नी राख्या जावै। नी तो कारखाने रो चलाए। कर देवांला।"

दोनू अचंबे सू पूछ्यो, भी चलास काई हुवै है ?"

कम्मू कीं देर सोच'र बोल्यो,'' चलाग्राः''''यार, चलाग्र हुर्व है।

दीन् पूछ्यौ चलारा रो मतलय काई हुनै है ? कम्मू वतायौ, क राज

लोग कारखाने ने वन्द करा देवैला। अर, हां, वे ग्रा वात भी बताई ब्रापसी उमर रैटावरां नै, मजूरी पर नीं राखसा रो सरकारी कानून <sup>प्र</sup>

है। जदई तो कारखाने सूंसगळां छोरी-छोरां नै काढ़ दिया।" पछै कम् एक लांम्बो सिसकारो लेय'र वोल्यो, "क्रव दीन इसा में म्हारो काई दोस है ? अबै म्हैं कठै जाऊ ? ब्राज संसार में म्हारी मां होती तो ·····?" इतरो वोल'र कम्मू फेरूं फूट-फूट'र रोवए। नै लागग्यो ।

दीन कम्मू री बात सुएा'र उदास होग्यो । वो क्राप रे पग रै अंगूर्ड सु परती कुचरतो-कुचरतो बोल्यो, "यार, तूं, रो मत । तूं किए। रें हैं होटल

ं में काम बयुं कोनी करैं ? श्रापणी उमर राघणाकरा टावर होटलां मार्थ ं काम करै है ।"

कम्मू बतायो, ''दीनू पैली महं काळ री होटल माथ काम करतो हो। पगा, उठै भूं भव्या मनै काम छुड़ाय दियो ।

दीन पुछयी, "वय" ?

44

ř.

et/!

'ग्रन्बा कैयो काळ पर्डमा व्होत कम देवे है इए। खातर कम्मू ग्रवे तनै बोर्ज होटल मार्थ काम करली है। ग्रर म्हनै काळ रै होटल स काम छडाय'र लाल रै होटल माथै काम लगाय दियो ।" दीनू नै कम्म बतायो ।

"तो यार, तूं उठै मूं फैर काम नै वयूं छोड्यौ ।" दीनू इए। यार

त कम्म नै दोसो समभ र जोर सु बोल्यो । -कम्म उदास होय'र योल्यो, "यार, दीनू तूं म्हारै माथै अण्ती रोस

र्ही करै है ? म्हारी बात तो सुराग्णा'' "यस, तूं था केवेली क बापू उठ सूं काम छुडाय दियो । अरै गेला भाई. काम करणे बाळे री सब जगे पूछ होवे है। "दीतू, कम्मृ ने सीख

सीलावए रैं ढंग मुं बोल्यो।

"नीं,दोनू,ग्रा बात कोनी ही । लालु रै होटल माथै मनै टाबर जाग्"र

والمجاورة बीं रा बीजा नौकर व्होत मारता हा । बापू नै जद महैं आ बात केंबती तो

गळी रा लाईसर/१३



वापू मनै ई मारता । अर अम्मी केंवती ओ हरामधोर, कामचोर, मजूरी कोरी करराँ। चाव है । होटल री कप, प्लेट या गिलास किया ई बीज नौकर रें हाथ सूं टूट-फूट जावती तो सगळा म्हारो नाम लगा देंवता । तारील मार्थ पर्धसा लेवया ने जद अटवा आवता तो लालू थोड़ा सा पर्धसा दैय'र कैय देवती कथारे बैटे रें हाथ सूं इतरा रिपियां रो उजाड़ होययो । पर्छ मनै पर्व लेवजा र अच्चा अरमी म्हार मार्थ थप्पड़, मूवका, लाठी, छंडा सूं बर्स पड़ता । अब, तूं बता नहें कांई कर्छ ? में कंठई क्यूयो-खाड कर लेवूं या बैर लाय'र मर जाऊं ? ईण जीणे सूं तो मरगा आछी है " इतरी कैय'र कम्मू

कम्मू रो एँड़ी बातां सुस्प'र दोन् भी उदास होयग्यो । पर्स, कम्मू न ावस बंबावतां धकां वेयो,"बावळा एँडी बातां नीं कर। थारा तीन भाई-बैन पैलाई मरम्बा। अबै तू एक ई तो धारै बाप रो बेटो है। अर, जे तुं ल नै काई-किसी कर लैपमी तो थारै बाप रो तो बंस ई दूब जासी। न्हारी ै, केबे है क बैटे सुंबस चाल है धर बाप रो नाम चाल है \*\*\*\*।

परा विचाळ ई कम्मुबोल पड यो, 'दीन, म्हारो ग्रव्या भी ग्राप रो म चलावरा खातर कठैई पोपळ रो पेड लगा लेउमी। पछै, जियां लाभ रो म बोल्यो जावे है वियां ई पीरु रो पीपळ बोल्यो जासी। ग्रर इसा सं । रेश्वदद्या रो नाम चालतौ रैसी।

दीन, कम्मू री बात कोनी मानी । वो दीनू नै मनभायां, "मृग्तु नै न, जठ माई-मा हवे है । बठ सगळ टावरां मार्थ ऐटी दाता ई हवे है । । बात भी महारी माँ मनै केया ही । पछै, पारी ग्रम्मा जद मुँधारै प्रत्या लारै ब्राई है। तनै तो दुख दैवती रैवी है। घर, दूजा रै सामै धारै मुं ड़ी हेत राप्तरा रो नाटक करती रैयी है। य*र दे*गा दाता नै मगद्रा ग्राहा र्यां मूं जाणे है। क वा कितोक भूटी है ? घर विवोध नाची है ? वी री ों में हांदूजा इस खातर मिलायें है नपूंच या नागी राट है।"

कम्मू भट मूं दोन् रै मू है मार्थ हाथ राखंर बोन्यो, "नी, दोन, हो। एए नै रॉड नी बोल। बाम्हारो मारी ठोड़ झाई है। स्टेंडरा नै मा

ें मान् हैं। महै उस रो घसो ई झादर करे हैं। महै उस से लेक

ार हा एक पार स्तारा भूगा है। को भी रीमा तरमूं हैं। "" पमा मने कुमा मां ये हेन देवें ? कुमा मानीन के किया री नेवा करूं?" इनये कंप करून मान री तिर विनाळ राह्येर पुक्कमा ने नामयों।

प्रवेदीनूरी प्रौत्याभी टबटवा माई। यो सिसक्यां बोल्यो, "कम्मू, म्हारा सर, म्हानं नक्षा मे बतायो क साधरती स रीमां है। ब्राबारीभी मां है। तूं टण रीमेबाकर। ब्रा ब्रासीस वेबेली। हेल देबेली। घर दुनियां मे बारो नाम ऊंनो कर

इतर में सम्मू रो प्रव्या पीम, रोस मूं तांव दायों लाल होने उसा दोनां कानीं प्रावती दिल्यों । पीम रे होय में हंडो भी हो।



दीनू चाराचको बोल्यो, "कम्मू, झारो ग्रन्या डंडो लेय'र ग्राय ोहि ।

कम्मू घर दीनू हवका-वक्का रैयाया । वे दोनू डर मूं: कृषिण नै गम्या । परा, फैर, उसा रै मार्थ में झाई क भाग चाली ने अर वे रूं उठ सूं भाग छुद्या । पीक उसा दोनू रै लार भीरो - प्रिस्टिवर ए रै हाथ कोनी आया !

प्रांगै सडक मार्थ एक जूलूस जाय रेयो हो । जूलूस दुनिया री ए मोटो ताकता रै विरोध में हो जिकी ताकता परमाणु बमां सू जी रो रूप बिगाइनौ चार्ब है । घर दुनियां रै मिनसां नै मारणी वै है ।

. कम्मू ब्रर दीनू, जुलूस री उस भीड़ मांय मिलम्या । जुलून में गजोर-जोर सुनारा लगा रैया हा ।

सुणो, सुणो "ब्रा मिनलां जुणी…… बार-बार नी धावैसी। धरतो ने मेटण वाळो सगतो ः धरतो सु मिट जावैद्रो।"

प्रवेकम्मूग्ररदीन् जुलूसरै घागै-प्रारी जोर-जोर मृनारा ताचाल रैया हा । जलस जिलाधीय रैटक्टर कानी तेजी सं

गायता चाल रैया हा । जुलूस जिलाधीय रै दक्तर कानी तेजी मूं भि बढ़ रेबी हो । बोड़ी देर में जुल्म जिलाधीय रै दक्तर धारी पिर रकायो । उठै मुलका बादरी भोड़ नै रोकण बास्ते पुलिस रा भि सङ्ग्रा हा ।

ं जड़्या हा । ज्या जुलूस रो एक ब्राटमी माईक सुंजीर-जोर मृं चैतावर्गा रेगो से क भी जिल्लामिक की कार तमा रेजिया की स्टूर्निक

प रेंगो हो, क श्री जिलाधीत जी, इरा नगर रें लोगों से झा चंता-प रें मोटी-मोटी सगरमां ताई पूगा देवे, व वे परमान दम जेड़ा घाती हथियार वराावराा वंद कर देवे जिरा सू घरती माता ह इसा रै मिनखा रौ नास नीं हुवै ।

ग्रा बात सुर्एार कम्मू हिम्मत करी क घरती मां री सेवा कार्य रो घ्रो सांतरो मौको है श्रर वो माईक ताई पूगग्यो । ग्रर वो मार्य मार्थ जोर-जोर सूंबोलरा लाग्यो ।

धरती मां री रिछपाळ सारू, दुनियां रै सगळे वच्चा रो भ्रो है क घरती मां रो रूप नीं विगाड़ी। थे तो दुनिया देखली। महां छोटी-छोटी कंवळी कूपलां नै भ्रर खिलती कळियां नै भी दुर्वि देखला द्यो। इसा खातर वम वसावसा बंद करो। दुनियां रैटा पर दया करो। नीं तो ग्रा साफ चैतावसी है क

"जिको खाई खोदैलो · · · · वो खाई में गिर जागैलो जिको घरती मां नै मैटेलो · · वो घरतो सूं मिट जागैलो ।

कम्मूरा ए नारा गगन में गूंजरा लाग्या। श्रर एक छोटे बाळक रो ऐडो होसलो देख'र खुलूस रा लोग नाचरा ने लाग्या। ह

बाळिक रा एडा रुविया पत्त र अपूज रा लाग नाचएा न लाग्या। क लोग ब्रागी बढ़ र कम्मू न ब्रागर काथां मार्थ उठा लियो। उएा माळावां सूं लाद दियो। कम्मू रो अब्बा पोरू भी उठ ब्रायग्यो। व दूर खड़्यो देख रैयो हो। उएए र कन्न खड़्यो एक ब्रादमी बोल्पी "ऐड़ा टावर दुनिया रा ब्होत बड़ा ब्रादमी बएं है।" कम्मू रै ब्रह्मा प्रै ब्राह्मा गिली होगी।

ग्नर एक दिन कम्मू ग्राप रैस्हेर रो व्होत वडो नैता <sub>वण्यौ</sub>।

ा गमी स लाईसर/<sup>1</sup>

### बटाऊ

एक गाव हो। वी गाव रै मायं मुखी रो घर हो। घर रै चारू मेर बादी बाड़ हो। घर में एक बोदो भूपड़ो हो। भूपड़ै रा किंबाड़ सीरिएये री जेंबड़ी मूं गूँघ्योड़ा हा। बीं रै घर री हालत ऐड़ी ही जाणै सगळै गांव री गरीबी भेळी होय'र ग्राठ जमगी ही।

मुसी गांव रै ठाकर ग्रर बीजै लोगां रै ग्रठै लोरसो कर'र आप रो ग्रर ग्राप रै बरस दमेक रै बेटे लिछू रो पेट पाळै ही ।

एक दिन लिछू बार्र मूं घायो । वो घाप री मां नै उदास देखी । वो पूछ्यो, 'मां काई बात है ? तुं घाज इनरी उदास नयूं है ?'

पैली तो मुखी कीं कोनी बोली। पछं वा त्राप री ब्रांख्या में ब्रांसू भर'र बोली, 'बेटा गांव रे लोगां री किरपा सूं बारी बैन रा हाथ तो पीळा होग्या। पए अबै वीं नै सासरे गई नै चार पांच मईना होबएा ने ब्राया है। उपर सूं राखी रो पैलो तिवार है। उएा नै किंकर बुलावां ? म्हारै करने तो कीं कोनी ?'

गळी रा लाडेंसर/१६

लिछू बोल्यी, 'मां, ऐड़ै मोके मार्थ ठाकर सा ब्रांपरागी मदद कोर्न करैला काई ?'

सुखी कैयो, "वेटा, ठाकर सा श्राप्ता घरती मदद कर है परा"!" लिछू बिचालै बोल्यो, 'परा, तूं भो तो ठाकर सा रै ब्रठै सगळां सूं

घराो खोरसो कर है। ग्रर ग्रवं जे-वे श्राप कानी सूं मदद कानी कर तो हूं ठाकर सा नै उथलो देय दै अर •••• ।"

सुखी लिछु रै मूंडे मार्थ हाय रासती कैयो, "नीं वेटा ग्रागे कीं <sup>मत</sup> कैयी । ठाकर सा रा श्रांपण मार्थ श्रस्मिस्तत उपकार है । श्रर श्रांपसी श्र संस्कृति है क किए। रै करयोड़े गुर्गा ने नीं भूलगो चाईजे । फैर जै किए रो बूए। पाएी ब्रापां सा लेवां तो वीं रै लूए। पाएी नै कदैई नीं लजावणी चाईजै ?"

लिखु पूछ्यो, "तो लूएा पाएंगे नैं लजावसो भी श्रापस्ती संस्कृति हैं कांई मां ?"

मुसी कैया, "हां बेटां, या भी यांपणी संस्कृति है।"

लिछु फैर पूछ्यो, "मां ! ठाकर सा रा घ्रापणे मार्थ ऐड़ा काई गुण है

जिए। सारू वृ उए। रा जस गावें है ?" मुसी री मांस्या डबडवा माई। वा बोली, 'वेटा जद तू हो वरसां

्रियार बापू ने लूगासर रेचोबरो रेमून रेच्यत्राम मार्थ पुलिस

गर्दी रा माईगर/२०

पकड़ लेय गी । उसा टैम धारै बापू नै ठाकर सा राज रै जवाटा मायं मूँ छुड़ा लाया।"

''तो म्हारो बापू खूनी हो कांई ?'' लिछू पूछयी ।

"नीं वेटा थारो बापू खुनी कोनी हो ।" सूखी बीली !

"तो, पुलिस म्हारे बापू नै क्यूं पकड़यो ? मनै गांव रा छोरा केवे है क इस्स रो बाप खूनी हो। म्राज तो मां, म्रा बात मनै पूरी बतासी पडसी।" विद्यु जिद करसानै लागस्यो।

मुखी लिछू नै बिलमावस्त री घर टाळस री घस्ती कोमीस वरो।
पस्त वी री एक ई कोनी चाली। लिछू प्रापरो बात मार्थ प्रट्यो देवो घर
बार बार पूछतो रेथों, "काई म्हारो बापू खूनी हो ? ग्राज तो, मा तमें पूरी
वीत बतासी के उन्हें स्

वात बतागाी ईज पड़सी।"

-

हैकड मुखी नै बाल हठ रै सामी भुकत्ती पड़यी मर वा बतायो, "बैटा, प्रापण गांव रै ठाकर सा घर लूगासर रै चीधरी रो प्राप्तनी मेत ने नेयंर पत्ता दिनों मूं भगड़ों चाल रेबी हों। एक दिन ठारर मा राव रें पर्णमार्ग लोगों मूं बी सेत में निनात्त करवाय रेवा हा। घारों बातू भी उन्न में हो। इतरे में लूगासर रो चीधरी धाप रै लोगों ने नेवंर बी मेत मोर्थ पूर्णों। पढ़ें धापस में बोसिया बाजरा लाखा। बुग्त उत्तरी दिना रेज्य मूं बी भगड़ें मार्थ लूगासर रे चीधरी रोगून होंग्यों। घर दाज्यम नगड़ों

ठाकर सा मार्थे ग्राप्र्ग्यो ।"

"तो पर्छ म्हारे वापू नै पुलिस क्यूं पकड़यो ?" लिछू ब्राप री मां मृं उथलो पूछ्या ।

ठाकर सा नै थारे बापू माथै पूरो भरोसो हो क जे · · व्यारो बापू बीं चौधरी नै मारएो री हां भरते तो ठाकर सा थारे बापू नै जेळ कोनी होबएा देवेला । थारो बाप हां भरतो । ठाकर सा आप रा बचन निभाग। अर राज रे जवाड़ा मायं सूंथारे बापू नै छुडा लाया।

पए ठाकर सा वेथाग जतन करणे पर भी मौत रे जमदूत री बांध्यां है थारे वापू नै कोनी छुड़ा सक्या वीं टेम थारे वापू री अरथी कन्नै बैठ'र समूर्ग गाँव रे आर के लोगों सामी ठाकर सा आं परएा कर्यो हो क भोमें री गुवाड़ी रें भार आज सूं म्हारे माथे हैं। जद सूं आज तोई ठाकुर सा री पूरी किरपा हैं। इस खातर महैं किए। रे गुए। अर तूस पाएं। नै हराम कोनी कर सकूं। एडो करणो आपएं। संस्कृति अर आपएं। संस्कारा रो अपमान है वेटा।"

लिछू दस बारह बरस में पैली बार सचाई ने जागी अरंद बो छोटी सो टींगर सोच री गैराई में डूबग्यो ।

इतरैं में ठाकर साउण रैं घरै ब्रायम्या। लिख्नू नीचै मार्थं सूं ठाकरहा नै मुक'र मुजरो कर्यो। सुली ब्रायरी गीली ब्र.स्याने फटापट ब्रापरी लूगड़ी सूंपूंछ'र घुंघटो काढ़ लियो। ाक्र सा मुळक'र बोल्या, मुखी भाभी श्राजदोनूमां वेटी उदास <sup>ब्</sup>यूंहो ! कार्ड भ्रवलार्ड है ?''

मुखी बोली, "धृण्या आप री छत्तर छाया में की अवसाई कोनो । भगवान आप ने वृत्ताया राखे ।" 10693

गुरु सा केयो, ''भीं भाभी कोई बात तो है परा तूं म्हारें मूं छिनायें हैं। परा कोई बात कोनी में लिछू सूं पूछ'र रैवूंला।'' घर ठाकर सा लिछू रैं सिर मार्च लाड सूं हाथ फैर'र पूछ्यो, ''कोई बात हैंर लिछ ?'

तिछू री ब्रास्यां में ब्रांसू ब्राग्या बर मुबक्यां लेजतो केयो, "ठाकर

सा बाई नै रास्त्री रै तिबार मार्थ ·····?" ठाकुर सा विचाल ई बोलन्यो, "क कियां लायां । भाषा बानळा हो

रोत्र मां वेटा ? इतरी सो बात सन्तर उदाम होयन्या ? मर्बेन्यू -जयान है । गांत ई रावळे मूँ ऊंठ लेयजा । घर सरचे गांतर की पर्देश भी लेंच चार्ट ।

णात ई रावळे मूं ऊठ लेयजा । घर सरचे गातर की पर्देशा भी लेक नाई । पर राषा ने एक दो दिन में लेयर घठे पूरा जाई ।"

मुखी घर बिछू रैं चैरे मार्च जुसी री सैर दोडगी । देगा योद्धे रहेर में मुखी जदास होय'र सोचए। लागी क ब्रो छोडो सो टीगर छोगी में किया

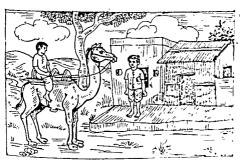
ुक्त प्रथम हाथ र साचिता तामा के भी छोड़ा ना देगर छोड़ के कर किया है मैंगेर प्राप्ती ? ग्री तो मारण ई बोनी जाणे । पछ बार्ट टा, बार्ट बार्ट प्रवर पार्ट पर दोरण रो सामनी करणो पहेला? पण, जीवड़ा टार ने तो परण हुस भेल्यां ई सुख मिले ला। घर वा ग्रा सोच'र श्रापरै जी नै घर्णां करड़ो कर लियो ।

बीजै दिन ठाकर सा लिछू रै जार्रो री त्यारी करदी। तिछू छे मार्थे चढ'र स्नाप री बैन राधा ने लैंबरा ने बहिर होग्यो।

गरम्यां रा दिन हा। लिछू श्राप रैगांव सूंसिंझ्या रो वहिर होये। वो श्रा सोची क काल दिन उगै भौर में ई वाई रैसासरै पूग जा बूंला ग्र ग्रगले दिन बाई नै लेय श्रावूलां।

लिछू वहिर हुयो उरा टेम श्राभो साफ हो । वो श्राप रंगांव पूं कोस दो-ऐक पूर्यो होसी । रात पड़गी । श्रर पूर्र खोड़ में श्रन्थेरो ई श्रन्थेरे छाय ग्यो हो। उतरादे पासे हळकी हळको बीजळी खोवे हो । देखता ई देखता। बा रात मेह श्रन्थेरो रात होगो । वादळ्यां री गरज काना रा पड़दा फाइने लागगी । कड़कती विजळी खोड़ ने सैचनरा कररा ने लागगी । श्रर मूसळी धार पासो वरसस्य ने लागगो । लिछू टावर हो । पस वो घवरायो कोनी । श्राप रो भाखलो ग्रोड र ऊंठ मार्थ बैठयो रेयो । ऊंठ चालतो रेयो । ऐड़ी मेह श्रन्थेरी रात मार्थ ऊंठ डगर वदळ लोनो ।

थोडी देर में दिखलादी पून चाली । बादळ खिडल्या । ग्राभै री ाफ़रो उत्तरग्यो ऊंठ एक गांव में पूर्यो । गांव में पूरी सुनसान ही । एक ी में चानलो टिमटिमाबो हो ।



लिछू माप रै ऊंठ नै उस घर रै मागे रोकर पूछ्यो, 'मरे मई कई जागे हैं,तो बतामों क इस गांव रै चौधरी रो पर पर्ट रैं

तिष्टू मूँ उमर में बरस चारिक बड़ो ऐक छोरो बार्न मानो माना ज्तर में कैयो, "गांव रें चौषरी रो घर भी ई है। तू कुरा है?"

बिछू योल्यो, "भाई महे तो बटाऊ हैं । घर मेर्ट मधेरी रात में मान्य हिन्यो रात बाबो चाव हैं ।"

े ००० विद्यू ने वो द्योरो कैयो, "द्याय जा भाई ! रात वासो तेर ते ।

निष्ट्र वस्त पै पर में ऊंठ ने सूर्ट मूं बांध र तिशानी में स्यों।

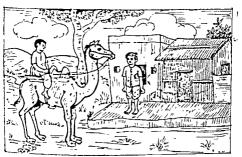
भेल्यां ई सुख मिले ला। ग्रर वाग्नासोच'र ग्रापरं जी नै घर्णां करड़ो इर कियो।

बीजे दिन ठाकर सा लिछू रै जाएँ री त्यारी करदी। लिछू मार्थे चढंर श्राप री बैन राघा ने लैबए। नै बहिर होग्यो।

गरम्यां रा दिन हा । लिछू आप रै गांव मूं सिझ्या रो वहिर हो<sup>ये</sup> वो आ सोची क काल दिन उगै भीर में ई वाई रै सासरै पूग जा वृंसा अगले दिन बाई नै लेय आवृलां।

लिछू बहिर हुयो उए। टेम आभो साफ हो । वो ग्राप रै गांव । कोस वो-ऐक पूर्यो होसी । रात पड़गी । अर पूरें खोड़ में अन्वेरो ई अन्वेर छाय ग्यो हो। उतरादें पासे हळकी हळको बोजळीं खोबे हो । देखता ई देखता वा रात मेह अन्वेरो रात होगी । वादळ्यां री गरज काना रा पड़दा फाइं लागगी । कड़कती बिजळी खोड़ नै सैचनए करए। नै लागगी । अर मुलळ धार पाएं। वरसए। नै लागगी । कुट मुलळ धार पाएं। वरसए। नै लागगी । लिछू टावर हो । पए। वो घवरायो कोनी । ग्राप रो भाखलो ग्रोड र ऊंठ मार्थ बैठयो रैयो । ठंठ चालतो रैयो । ऐईी भेह अन्वेरी रात मायं ऊंठ डगर बदळ लीनो ।

थोडी देर में दिख्यादी पून चालो । वादळ खिङ्ग्या । आर्म रो ग्राफरो उतरग्यो ऊंठ एक गांव में पूग्यो । गांव में पूरी सुनक्षान ही । एक तिवारी में चानएो टिमटिमावो हो ।



लिछू भाप रै ऊंट ने उस घर रै भागे रोक'र पूछ्यो, "धरे नई कोई जाने हैं]बो बताधो क इस गांव रे चौधरी रो घर कठे है ?"

तिष्टू मूं उमर में बरस चारंक बड़ो ऐक छोरो बारै ब्रामो ब्रर पड़ <sup>स्तर</sup> में कैयो, "गांव रै घोधरी रो घर क्रो ई है। तूं कुए है <sup>?</sup>"

सिष्टू बोल्यो, ''भाई म्हे तो बटाऊ हूँ । ग्रर मेह ग्रंबेरी रात में मारग भूतियो रात वासो चाबू हूँ ।"

तिष्टू न यो छोरो कैयो, "ग्राय जा भाई ! रात वासो लेय लैं।" तिष्टू उस्प रैंघर में ऊंट नं लूट मूं बाध'र तिवारी में गयो। उस्प छोरै सूंरामा सामा कर्या।

. बो छोरो लिछू नै पूछ्यो, "तूं किसै गांव रो है 🖟 🥂 🖔

"मैं मोठासर रो हूँ।" लिछू कैयो।

"काई साख में हैं ?" वो छोरो पूछयो।

"म्हेँ भींग हूँ।" लिछू वतायो।

"धारै वाप रो कांई नाम है ?" इस वार उस छोरै री ग्रार्स्या में <sup>ही</sup> बीजी चमक ही ?

लिलू प्राप र वाप रो नाम वतांताई वो छोरों भाग'र ब्रोप र घर र मायं गयी। घर घर रा गूदड़ा घर वी जी चोजां ने ब्रंडीने जर्डाने फंकंण हैं लाग्यो। इस विचार्ळ उस रो मां रो नींद उचटनी। उस रो मां पूछ्नी 'किसना काई वात हैं रे श्रर तूं काई जोवें हैं ?''वो छोरो किसनो हांकर चढ़योड़ी वोल्यों "मां तूं महैने जल्दी बता गंडासो कर्ट हैं ?'' प्रवा बीं री मां हड़वड़ा र उठी, घर कैयो "धर काई वात है किसना ? तूं गंडासो कर पूछे हैं ?'' किसनो योल्यो, "मां घाज महारे बाप ने कतल करिएये रो बेटो म्हारो दुसमी महारे घर घाम्यो है। धर्य महें उसम जीवतों कोनी बावस देवूं ता। तूं मने गंडासो जल्दोसों बता।" किसनें रो मां बाप रो पूरी समती मूं उस ने समकायों, ''तूं वावळो होग्यो काई?'

ं यद्यी सा साईवर/र्वे

एक प्रशी नात में एक बटाज प्राची है। पदे, घर ब्रायोई बटाऊ रो आव प्राट करणी प्राटणी संस्कृति है देटा ! चावें वो प्रांपणी दुसमण ई बयूं नी दें। इस स्थानर दर्ग कार्न दूव से सोगन है क घर ब्रायोई बटाऊ रे माथे दें हु कीर्याय करेंगी तो हु प्राची संस्कृति सो दुसमण है बरं तू महासे दें। कोर्ना है।"

विसनी मां १ दूध री मोगन री बात मुंग् र चुंप होग्यो । पंछा उटा रेबाळ रेमाय लाग्योटी सामरी भोभर कोती बुभी । वो रीसी बळती तिवारी में दी मातर एक मार्च मार्च एक परवरमां प्रर एक कामळ रार्ख दी । लिए किसने में की कोती बुभ्यो । धर यो चूप चाप मार्च मार्च परस्था ।

विसन री मां रो जी कोनी धाष्या वा सोच्यो, स्यात टीगर की कर गों बढ़े? घर वा दूध रो कटोरो भर'र तिवारी में ब्राई । प्राण देखें तो पोळे मृदं रो वरस दस बायह रो छोरो हो । वा उर्ण ने दूध रो

पोंड मृद्ध से बस्स दस बाग्रह से छोती हो। बा उसा ने दूध से कटोरो देश र कथी, "बेटा दूध पी लें। घर जे तन्नी भूख है तो जीवड़ो साबू काई?" लिछू कथी मांसा रात री बेळा थे क्यू कर्ष्ट देखों

हैं। रात रात कार्ट लेवू ला ?"

पण किसन री मां उरण ने खीचड़ो बाळीमें लाग'र दियों।' बों
भीचड़ो घर दूस खाय'र सोच्यो था लुगाई कितरी लिछमो है। घर भली

17

छोरै सूरामा सामा कर्या।

बो छोरो लिछू नै पूछ्यो, "तूं किसै गांव रो है। 🐃

"मैं मोठासर रो हूँ।"लिछू कैयो। 🦈 🗇

"काई साल में हैं ?" वो छोरो पूछयो । 💮 🕬

"म्हेँ भींग हूँ।" लिखू वतायो।

"थारै बाप रो कांई नाम है ?" इरा बार उरा छोरै री ब्रार्स्या में बी जी चमक ही ?

लिछू आप रै बाप रो नाम बतांताई वो छोरों भाग'र ग्रांप रै प्र मायं गयी। ग्रर घर रा गूदड़ा ग्रर वी जी चोजां नै ग्रंडीने फर्केण लाग्यो। इए। बिचाळे उए। री मां री नींद उचटगी। उए। री मां पूर् 'किसना काई बात है रें? ग्रर तूं काई जोके हैं? "बो छोरो किसनोहाँष चढ़योड़ी बोल्यो "मां तूं म्हेंने जल्दी बता गंडासो कठे हैं?" ग्रब बीं मां हड़बड़ा'र उठी, ग्रर कैयो "ग्रर काई बात है किसना? तूं गंडासो व पूछे है ?" किसनो बोल्यो, "मां ग्राज म्हार बाप नै कतल करिएये बेटो म्हारो दुसमी म्हार घर शान्यो है। ग्रव महें उए। ने जीवतों कीं जावए। देवूं ला। तूं मने गंडासो जल्दोसों बता।" किसने रो प्र ग्राप री पूरी सगती मूं उए। नै समसायो, "तूं बावळो होग्यो काई मारा बारगी मारागी संस्कृति है बेटा ! चार्व वो मारागो दुसमण ई बयूं नी हुँवें । राग सातर तने स्हार्र हुव सी सोगन है क घर मायोडे बटाऊ रे साये है तु बोर्ट बार बर्गनों नो तु स्वारी संस्कृति सो दुसमण है म्रसं तु स्हारो

रंग प्राची रात में एक बटाऊ बाबी है । पर्छ, घर बाबोड़े बटाऊ से बाब

रेटो कोती है।" विस्कों मी रें टूप ही स्रोगन की बात मुंग्यूँक चुँप होस्यों। पँग जगा <sup>दे</sup>वाळवे मार्थ लाग्योटी सायकी मोभक कोती बुभी। वो रीसां बळतों तिवारी

ों यो सानर एक मार्च मार्च एक क्यारणों घर एक कामळ राखें दी ।

लिष्ट्र विसर्ग ने की कोनी बुभूको । घर को चूप चाप मॉर्च मार्थ रक्षरको । है। कितरे हेत हुलराव सूंबात करी है। लिखू ने ग्रापरी मांगर श्रायगी।

उठी नै किसनो श्राप री मां नै इस भांत हेत सूं वात करता सुरग'र तारी तील में गुलगुलै दांयी तळीज रैयों हो ।

मूं अधार लिखू आप रै ऊठ ने त्यार करयी अर सोच्यो हैं मार्थ किएमू ई वाई रे सासरे रो मारग पूछ लेवू ला। अर वो ऊठ ने लेय'र उठ सुंबहिर होयम्यो।

पर्ण किसने ने नींद कोनी आई । बो लिखू रै लारे ई आप रें ऊंठ मार्थ जीन कंस र मूंडे मार्थ ढाटो मार'र हाथ में गंडासी लें<sup>या</sup> दूजें मारण सूंगांव रै गौरवें आ पूर्यों ।

श्रवे सूरज री किरए। रो बोमो घोमो उजास घरती मार्ष कृतए ने लाग्यो । खोड़ में पंखेष्मां रो चोंचाट सू चळ-पळ होवए। ने लागी। विश्व आपरी घुन में ऊठ मार्थ बैठगो जाय रैयो हो । इतरे में किसनी गरजी "श्रो जातोड़ा बटाऊ ठेहर! श्रवे तूं जोवतो कोनी जावेलो ।" विश्व हक्की-बक्की रेयग्यो। वो बोल्यो "माई तूं कृषा है ? प्रर थारो में क्रीं विगाडयों हं ?"

किसनो कैयो में, "वो ई हूं जिए र घर तू रात वासो लियो हैं।

श्रर हूं नों विगाड़यो है थारो बाप म्हारे बाप रो खून कर्यो है। इस खातर क्रो बदळो में रात ने ई लैबती हो परा म्हारी मां कैयो घर भायोड़ें बटाऊ रो भ्रादर करसी भ्रापसो संस्कृति है अर वा भ्राप रै हुम री सोगन दिराय दी नों तो रात ई म्हें तन्ने मार काढतो।"

लिछू डील-डोळ में किसने जैड़ो ही हो । पए। जद किसनो आपरो मां री बतायोड़ी संस्कृति री बात कैयी तो लिछू नै भी पाप रीमां री बतायोड़ी संस्कृति री बात याद आयगी क किए। रो ईं लूए। पाएगी सायोडो हराम नीं करएगै चाईजे । अर किए। रे उपकार नै कदै ईनी भूलगगो चाईजें। ब्यूं के लिछू रात बासो किसने रे घरे लियो हो अर किसन री मां रे हाथ रो द्घ सोचड़ो सायो हो। ई बात नै लेय'र लिछू आप री मां री बतायोड़ी संस्कृति री बात मूँ बंबच्यो हो। बो किसने मार्च हाय उठावरगो कोनी चाबो हो। पए। किसनो तो लिछू री जान लेकगा नै उताह हो।

;

इतर में गांव रो मानीतो पंडित बरस साटैक से उनर रो नास्यस्य राम ग्राप रे सेत कानी जावो हो । उसा नै उसा दोनां रो सोटो मुर्गाणियो तो वो उट पुगर्यो ।

किसनो माप रें गोडां मीचे लिखु नै दवा राख्यों हो । घर यो बीरें निर माथें गेंडामो बाषण बांळो हो इतरें में नारायप राम गेंडामो परच निर्मे पर दकाळ्यों ''मरें मो काई जुल्म करें है बेईमान ।'' किसनो बोल्यो, ''दादा ग्रो म्हारै बाप रै दुशमी रो बेटो है इस नै मैं ज्यान सं मारै बिना कोनी छोडं।''

मैं ज्यान सूं मारै बिना कोनी छोड़ं।" पंडित नारायण गंडासे नै इतरो जोर सू पकड़यो हो क किस्<sup>नै</sup> जैड़ा चार किसना भी उएा रै हाथ सूंगंडासो कोनी छुडाय सका हा। पंडित वा दोना नै श्रळगा श्रळगा कर सगळो बात पूछी । पर्छ पंडित नारायरा कैयो ''किसना तूं घरै श्रायोड़ै बटाऊं रै श्राव ग्रादर री संस्कृति निभाई । ग्रर लिछू तूं किए। रै उपकार ग्रर लुए। <sup>पाएी नै</sup> हराम नीं करणे री संस्कृति निभाई । जे म्हारी नूवीं पीढी इरा भांत न्नाप रैदेस रो संस्कृति नै जाए। लेवै तो न्नाज न्नापां नै सत रैमार**ा** सूं कोई कोनी डिगा सर्के । परा एक संस्कृति श्रापरा देस रो श्रो<sup>र है</sup> क ग्राप सूंवडै रो कैंगो मानगो चाईजै । इग् खातर म्हैं बुडो ब<sup>ईरी</sup> होर्ग रै नाते ग्रा कैवराी चावूं हूं भ्रर थां दौनू नै म्हारी ग्रा बात मानगी पड़ेली क होवए वाळी बात तो होयगो । जद तूं इए नै रात भाई कैय दियो ग्रर ग्रो तनै भाई कैय दियो तो ग्रवै थै भाई-भाई हो। इए यातर भाई-भाई में भगड़ों गाँव खातर देस खातर समाज खातर

माच्छो कोनी हुवै है। म्हारो ग्रो केसो है क ये दोनू गळ मिलो। ग्रर इस री वैन <sup>नै</sup> लेवस नै प्रापा तोनू चालां। वा म्हारो बेटी है। ग्रर यां दोना री बहन हैं।

किमनो घर लिछू गर्ळ मिलग्या । घर वे तोनूं उए। दोनू <sup>उठी</sup> े वैठर लिछू रो बहन मैं लेवए। नै बहिर होग्या ।

गळी रा साईसर/३

## गळी रा लाडेंसर

एक छोटे स स्हेर रै मोहल्ले री गळी ही । बीं गळी रा टाबर, दिन उमें मूं दिन विस्सू जे ताई तबड़का मारता फिरता हा । काई ठा बे किएा मोटी रा पट्योड़ा हा ? राम जागी, वे किएा टेम तो रोटी खावता हा ? पर किएा टेम वे न्हाबता-धीवता हा ? जद देखो, जद वे तो ई गळी मू बी गळी ताई भागता, नासता, अर हाका मचाबता ई दिखता हा !

वीं गळी मोहले रा लोग उएा मुं घएगई तंग हा।

मीं गळी रो ईज, एक बुढो-बर्टरी-स्मास्ती घर धीरै मुभाव रो बज्द दोदो हो । यो उस्स गळी रै टावरा ने इस्स दसा माय देस'र श्री मार्य प्रसी दौरप करतो हो ।

बज्जू दादो मन मार्थ सोचतो हो क मगर्छ माईता नै सार प्राप शी भीताद धाछो लागे है। वे उला नै पढ़ा तिस्ता र भना मिनस बराजका ग भोजें। परा, इला गळा रै सोगां री सीच नै कार्र टा कार्र होदम्यों? ना तो वे साप साप रै टीनसा कानी ध्यान देवें भर ना र्रवां मैं दस्स वारे माद कोई जिला है?

ऐर्ड सोच मायं हुव्योड़ो बज्जू दादो ब्राप रै घर री चौकी मार्प खड्यो हो । इतर मायं उग्ग रैघर रै श्रागै सूंकई टाबर हाका कग्ता, भगता, नासता, जावा हा ।

बज्जू दादो भट़ घर सूंबारे ग्राय'र उसा नै रोक'र पूछ्यो, "छोरो यांरो डील काईं लोहे रो बएायोड़ी है ? या उरए माम कोई मसीन लायोड़ी हैं ? वावलो ! थी दिन भर तबडका मारता फिरौ हो, यानै कोई केवए वाळो कोनी ?"

एक डेड़ होशियार छोरो बोल्यो,"दादा थांरी तर्यां घोळी दाड़ी ग्राय पछे महै भी इए। भांत ई बात करांला !"

इतरों बोल र वो छोरो ग्राप रे सागै वाळ छोरां नै केयी, मागी .. भागी ! ग्रर वे छोरा हाका मचावता भागरण नै लाग्या!

वज्जू दादै री लुगाई श्राप रै घररै श्रांगणै माय खड़ी ऐ सगळी बात मुण रेयी ही ! वा आप रे घणी ने केयी, "धानै कितरी वार वेयी है <sup>क</sup> धे टींगरां ने मूं है मत लगाया करी। क्यूंक ऐड़ी तो क्रा विगड़ेल क्री<sup>ताट</sup> हैं अर ऐड़ा ई क्यां रा मायत है।"

थोड़ी देर रूक'र वा बोली, ''ई गळी रा श्रर इस मोहल्ले रा संगळी ो। स्रां छोरां मार्थ खोजे हैं। स्रां ने ललकारें भी घएता ई है। पएत, बोक्यें षड़े माथै जे छांटां रो म्रसर हुने तो म्रां छोरा माथै फटकार भ्रर ललकार रो कीं ग्रसर हुनै !"

यज्जू दादो था नुरा'र चुन होबग्यो । घर वे दोनू आप रै धर मार्य पत्या गया ।

एक दिन गळी रा सगला लोग भेळा होय'र बोल्या(जे सगळे दिन-गळी रा टाबर, इस भांत उधम मचावता रैया, धमा चोकड़ी पालता रैया पर गळ्यां मायं रूळता रैया ती टाबरां रो नास तो हुबेलो परा साम ई प्रापां सगळां रो सुख चैन भी हराम होचैलो । इतरै माय एक जस्मी बोल्यो, "ती काई करों ?"

वीं नै उपनो मिल्यो, "भई द्याप-ब्राप री ग्रौलाद ने स्टूलां मायं पदण नैभेजो । इए मूं टायर भी सुधार जावेला ग्रर गर्छी मोहल्ले माय पॉति भी रेवैली ।"

ज्या लोगां मार्य वज्जू दादों भी सङ्गौ हो । यो बोल्पों, "माना, जे दावरां ने गळी मार्य शांति राखना सार स्कूल भेजों हों, तो बान से बो सोचनों महने तो ठोक कोनी लाल्यों । बल्लि, बापों ने तो टाइसों ने स्कूल रेस सातर भेजना है के वे दो बालर पट-सिखंद भसा मिनल दर्ण । पापरी जिस्मेदारी समर्थ बार बार्य बार्य ने निभावें।"

एक उसी दोल्पी, "बज्जू दादों दात तो देने से वेवे हैं। पर दादा...... दादो बोल्यो, "परां, क्यां री? नाया, स्कूल सू आयां पछ, आप पर टावरां ने मायत आ पूछ क आज वां ने स्कूल मायं काई पहायां? अर काई लिखायों, ? फेर वां ने घरे विठा'र घटा दो घटा स्कूल रो काम भी करवावों। क्यू क आज काल रा मायत वडै-चडै स्हेरां माय आप र टाव्रां ने कपड़ा लत्ता पेराय 'र, रोटो-वाटी खुलाय'र अर वस्तो-पाटी देवर स्कूल टीर देवें है। अर, हां वां री स्कूल री फीस जमा कराय र आप गे जिम्मेदारी खतम होवराो समफ लेवें है। परा इरा सू टावर जठ आप र मां-वाप रे लाड प्यार सू कटै है वठ ई वे आप रे घरां रे संस्कारां सू भी दूर होवता जावें है।"

इतर में उठ खड़्यों लल्लू जोर सूं हांस्यों । सगळा लोग वीं <sup>का</sup> देखरा ने लागग्या।

बो बोल्यो, "बज्जू दादो तो पून में बाता करें है। दाद न काई हा। टाबर किया पाळीजें है? दादें रेखुद रेतो औलाद है कोनी। म्रोतों हैं लोगां ने सीख देवें है। परए दादा प्रएो तप है वां राजी जाण है क प्री रोतप किसोक हवें है?"

लल्लू री मा बात वज्जू दाई रै काळवे मायं. घाव सो करगी। हर यो कसमसा'र रेयस्यो ।

इतर में तल्ल भागे केयो, "माई लोगां थे. चावी जितरा ग्री स्रोतत्त्वो, पग्न ई गळो रा नार्डमर तो आज मुधर नी काल । बयू क को र <sup>रीयत</sup> मजूरी माथै जाने या झां टींगरां ने दादो बतायौ बियां सुधारै ?"

लल्लू ने एक जर्गो उचलो दियों, 'देख रैं लल्लू तूं तो पाघरो लल्लू । दाई री वात साची है। क झाज रो जुग पढ़ाई लियाई री जुग है।

क्षि सूं ज्ञान वर्ष । झाज री दुनियां मायं काई होय रेयो है इसा री जासा क्षि में इसा जासा कारी सूं वो झाप रो भलो-बुरो सोचें। क्यूं क रिस्पढ़ री जमारों भी कोई जमारो हुवै है काई? ध्रस्पष्ठ तो विना सीग छ रैं जिनावर दायों हवे है।"

प्रवेधा बात समलां जमा रैजनमी

व्रवे क्या बात समलां जस्मारै जचगी क श्राप-प्रापरै टावरांने जूल भेजस्मा है।

स्रागलं कई दिनां मार्यं गळी रा घणकरा टावरां ने बांरा मायन कूल भेजणा सरु कर दिया।

यवै मोहल्लै, गळी, गुवाड़ मार्य शांति रैवरण नै लागगी।

एक दिन बज्जू री निजर गुवाड री चौकी मार्थ पड़ों। जर्ट एक दोगे उदास मन मूं जुप-चापःबेट्यी हो। बज्जू झाप री लुगाई धापो नै बृह्यी, 'मी टींगर किस्सु रो है ? धर भी स्कूप वसूं कोनी सबी ?''

पापो वीं टींगर कानी देखंद बोली, बोंदि तो वो छोगे हैं जिसे थी दिन पार सामी वर्षेडिया करती हो क पोली दाही बादा पर दादा की की रेण भांत बात करालां। बर साची पूछो तो, को दे छोगे हैं जिसे सम्बद्ध



गळी रै टींगरा रो नास करएाँ माथै तुल्योड़ौ हो।

वन्जू पूछ्यो, "परा स्रो है कुरा ?"

धापो, बज्जू रै कन्नै म्राय'र बतायो, 'भ्रापसी गळी रै मायं एक दारूकोर लीलियो हो नीं ? वीं री लुगाई टीलकी ही । टीलकी नै टी बी री वोमारी हो । बा तो वापड़ी म्रधवेई में ई मरगो । लीलियो कोई गयोवाळ रांड सूनातों कर'र कठैई निकळग्यो ।"

वज्जू मूंकला'र योल्यो, ''तू भी साय गेली है। म्हें तने वूमूं हैं गो प्रोरों कुए। है ? घर तू लीलिये घर टीलकी रो रांडी रोक्षणी लेप<sup>'र</sup> ।''

षापो घोरङ मुंबोली, "ध्यावम रामी, सगळी वात वताऊं हूं।… ्षी दोरो टीवकी से हैं। इस दै एक माई घोर होस्ती हो। उस रो ठा <sup>कोर्ता</sup> क प्रवै वो कठे हैं ?" पर्छ पापो एक लावो मिसकारो लेय'र बोली,

<sup>"मंड</sup> रो लोलियो तो कठँ ई बीं रांड रैं मागे मरस्यो, ग्रर श्रांटींगरां नै <sup>मुळी</sup> गुवाह रा करम्यो ।"

<sup>दरजू</sup>, घाषो रै मूर्ट कानी देग्यो, तो बी नै लखायो क धारो रै मूर्डि भाषे उदासी है भार यी रै मन मांय दया रा भाव है।

बज्जू घोड़ी देर तांई सोच मार्य डूबम्यो । फेर बोल्यो, ''तो क्रो टींगर क्टें रेवे हैं घर इसा नै रोटी कुमा घाले हैं ?"

घापो बतायो, "कई दिना ताई तो द्यांदोनूं नै द्यां री भूद्र्या रोटी

पालती ही घर बर्ट ईज रैदता हा। परा पूछा रॉड भी खोड़ीकी, निकळी। 🦫 🤈

ो क्षों दोनूं ने ब्राप रें घर सूंकाट दिया। एक तो कठें ई चल्यों गयो बर्ट को चन मो एक ग्रठ रेय ग्यौ।" वज्जू पूछ्यां, "फेर... ।

धापों केयो, "फेर काई " म्रो गळी नळी मागतौ फिरै है ग्रर भ्राप रों पैट भरे हैं,"

बज्जू सोच्यो, क धापी रेमन मायं ग्रांटावरां रैवादत ऊंडी पीङ हैं। पर्छ यो घीरे सूंघापों ने बूल्यो, "धापो, जे यारै जर्च, तो गळी रैई

लाडीसर नै क्रापां रोटो सट्टै राख लैवाँ। ग्रो ग्रांपणै घर रो खोरसी करसी ग्रुर ग्राप रो पेट भरसी।"

थोड़ी देर रुक्त'र बज्जू श्राप रै मन रो बात कैयों ''जे इस <sup>टॉक्र</sup> मायं मलेरा संस्कार हुया तो श्रागै चाल'र श्रोई श्रापसी बुढ़ार्प रो सावरी वस्स जावेली ।''

यज्जू री स्राबात सुग्ग'र धाषो नै लाग्यी जाणै तातै तबै मार्थ पाएँ। रा छांटां नांख्या है। म्रर वा रीस मांय स्राय'र वोली, "स्यागी, वे गैती बातां क्यूंकरो ही ?"

वज्जू पूछ्यो, "किया ?"

धापो बोली, "नीं तो भो ब्रापसी जात विरादरी रो है। ग्रर नीं ई भो भ्रापसी रिस्तेदार है। अर दूजी बात ब्रा है क ऐड़े बिगड़ेंब टा<sup>वर्स</sup> मांग भलेरा संस्कार कर्ट सूं ब्राबैला ? जिस्स रो बाप ऐवीली दॉर्र बोरियो प्ररगईबाळ हुवें। उस्स रा टाबर काई तो ब्रापसी बुढाप रा सावरी वर्मेला क्रर कांई सुबरेला ?"

वज्जू मुळक'र बोल्यो, 'धापो, मिनख मिनख सगळा एक सरीहा कोती हुवें है। जात पांत घर रिस्तेदारी तो बएगाया वर्ग है, भागवान ! धर्व रे<sup>सी</sup> मंस्कारां री बात इस्स बाबत तो तूं मुण्यो होवेला क कर्दई झाक मार्थ झा<sup>त</sup> हुवें है। स्थात, उस्स जड़े बाप रो झो बेटो भलो भी बस्स सकें हैं। फेर, लोग तो विगर्ङल जिनावरों नै ई मुधार लेवे है। यो तो निनल रो बीज है। आपाई भी इस नै सुधार सको हों ? धाप 'र रोटी निनेली भाषस्मा लाड प्यार मिलेली तो यो भी भलो मिनख बस जावेती। पर्वे विना मां-वाप रै टाबर नै पाळसी मिनखां सातर धर्म रो काम भी है।"

पर्ण, घापो रै मन मार्य बज्जू री बात ढूकी कोनी। बा बोली, 'यै मोबों रै बाळे मांय मत बेबी। कई सोची ? बयूं क इरा री भूबा घर मार्दन चै रोज कोई बसेड्री राखेला तो पर्छ ग्रापां काई करालां?'

यज्जू केयों, "देख धापू, धन तो धण्या रो हुवै हं गुवाछिये रंहाथ गांय तो गेडियो हुवै है । जे वे पूठो मांगेला तो घापां दे देवांला ।"

धापो तड़क'र बोली, "पै'लो बयूं तो मांबा ततां ? मर पर्छ बयूं दो जिमावां ? म्रापण ऐंडी काई खड़ी है ? क मापां इस्स टीसर में पाळ-पोन र बेटों करों । पर्छ या तो म्रो माछो कोनी नीबड़े या इस्स राम माया तेय जावें । इस्स में मापां ने काई फायदों है ? जद रामको ई स्हारी कुल में टावर कोनी दिया तो गछी रैटींबरा मूं किसी मांत टरडी हुवें है ?"

पए बज्जू रे काळतें मांग तो नाल् में बात सो पात पानो मीटो हो । बज्जू पायो हो क वो दुनिया ने दिसा देवें न प्राप-प्राप रेटाबर्सनें तो समळा ई पाने हैं । दूरों रेटाबर्सनें स्थित स्पृत्ति है ? इस रो जवाब लल्लू नै दैवूं।

बज्जू हेत सूं धापो नै समक्तावता थकां केयाँ, "घापो, हाप र नाक री माखी तो सगळाई उडावे है।"

धापू, बज्जू सूं उथलो मांग्यो, 'थै काई कैवएो खाबो हो ?" बज्जू बोल्यो, "धापो, म्हारो मतलब हो क दूर्जा रै टावरां <sup>नै</sup> पाळएी, पोसएोा-आर वा नै अंगेजराों, हेजराो घराौ दोरो काम है। अर जे आपा इएा काम नै करां तो क्षो धर्म रो मोटो काम हो<sup>बैता</sup>।"

इएा विचाल घापो री निजर गली में पड़ी । वा देख्यो, क<sup>्र</sup> पावस्योड़ी वकरी दो तीन छोटे-छोटे कूकरियां नै खड़ी चुंगाय रेबी ही ।

न्ना कूकरिया री मा थोड़ा दिना पेली एक गाडे रै नीच ग्राव<sup>1</sup>र मरगी ही । बकरड़ी ने कूकरिया खातर पाबस्योड़ी देख'र धापो, बोडों देर रातर ग्रान रो ग्रापो भूलगी । पछै, जद वा ग्राप रै ग्राप गांवे ग्राई तो वीं रै हिवड़े रो ग्रंतस मां री ममता मूं छठक उठयो। बा सोच्यो जद एक बकरी, कुत्तो रै जायोडा कूकरियां ने हैज'र ग्राप रो दूध पाय सके है तो महें एक मिनख रै जाये ने कोनी पाळू गढ़ें? ग्रर वा पगा मायं पगरली घाल'र वीं चौकी ताई ग्रास भवके निवरी

यो टींगर धापों नै एका एक आप रै कन्नै खड़ी देख'र घवरावी। वी रै मूंडे मूं अवाएवक ई निकलायो, "मां · · · महें · · · महें · · · · ग्रं

ताळ में जाय पूर्गी । जर्ठ यो टींगर ब्रापरी धुन में वेठ्यी ही <sup>!</sup>

गळी रा सार्वेष<sup>्ट्र</sup>

फेर वो मोर्च्यों तूं इन्हु नै मां किया देवी ? अर्थ आर तनै मारैला। पर वो उट र भागण नै लाग्यो । प्रस्त धापो भी रो बांबडी पकड़ली। वो नै पुचकार्यो । यी नो लाट कर्यो । फेर वीं नै आप रै घरै सार्वर बोली, दिग्न, बेटां अर्थ तूं आ गळ्या मार्यगोता खावती या रिज्यो कोनी फिरैली । अर्थ मूं तूं म्हारं घर ई रेडीली ।"

वो छोरो धाषो कानी, उतर्योडै वेरै मूं फाट्योड़ी ब्रांख्यां सूं ब्रर <sup>प्रवंदे</sup> मूँ देस रेयो हो ।

षापो बोली, "ग्राज मूं तूं म्हारो बेटो है। ग्रर म्हैं थारी मां हूं।"

देतरों केवता ई यो छोरो धापौ रै गांध घाल'र सुबक्या भरण ने लाग्यो।

वज्ञ रो मन फूल्यों कोनी समायो । घर उर्ग री म्रांख्यां सूं खुशी रा <sup>मांनू</sup> इटक्ला ने लागा ।

वो छोरो बोल्यी, "मां !"

वो छोरो बोल्यो, "म्हैन मोतो केवे है। श्रर म्हारो एक आई घार हो

बड़ी से बाईसर/४१

वीं रो नाम माग्एक हो । ग्रवे वो कठे है । म्हेंनै तो कई ठा कोनी, वो जीवे या .....?'' इतरो केय'र वो छोरो डुस्क्यां भरण नै लागयो ।

घजजू वीं नै पुचकारता धकां केयों, "देख, ब्राज सूरं थारो नाम मोती लाल है। घर धारे दूर्ज भाई रो भी म्है पतो लगाऊंला। मबै तूं रो मत प्राज थारे सातर पाटो बस्तो स्या देवूं ला घर तन्ने स्वूल पहण ने जावणी ₹ 1"

मो सोरो मञ्जू री बात सुरग'र डुस्क्यां भरती-भरती चुप होयायो।

भर गन में राजी होय ग्यो ।

पर्ण धापी बोली,"म्हें तो इसा नै लाडलो ई केंद्र ला । मुसा लाडल रा भाग सं ग्रापां इस स्हेर ने छोड'र किस ई टूर्ज स्हेर में

मार्ग पर उठ ई इस नै स्कूल में पहसा-लिखसा साह भेजां ता।

रताला गर्भ म प्रिकंड्स रो बाप या भूत्रा बखेड़ा घालेला।"

<sub>बर्ज</sub> रैमार्थमांय घाषो री ग्रावात जचनी । ग्ररवो छोरो <sub>पन मायं</sub> घणो ई राजी हुयो ।

द्मवै वे वस्वई जेड़ै वड़ै नगर मायं रैवला नै लागग्या ।

मांय वज्जू मोती नै एक सांतरी स्कूल मायं पहरा नै भरती करी र री पूँजी सूं वीं नगर मायं ब्राष्ट्रों सो एक घंघों सर कर दियीं !

पर वे सुख सूं घ्राप रो समै काटएानै लागग्या । समै बोततौ गयो-बीततो गयो पर मोती पढ लिख'र एम. ए. पास होग्यौ । वीं नगर रै मायं मोती रो माई <sup>माए</sup>क भी रेयवतौ हो ।

माएक जिएं टेम इए। नगर में आयी हो, उए। टेम वो इए। नगर रों मोटी मोटी सड़का मार्थ रूळती फिरती हो।

एक दिन वो एक मोटें स वंगल रै मार्ग खड्बो हो। वंगल रो मानिक एक मोटों अफसर हो। वों अफसर रो वेटी वरस दसेक री ही। जद वा अपरी स्कूल वस मूं उतर'र झापरे वंगळ मायं जाय रेयो ही तो गुन्टा उए मार्थ कामळ नाख'र उरए में उठाय रे भागए। नै लाग्या। इनरं मं निएक जोर-जोर मूं हाका करण नै लाग्यी। लोगवाम भेळा होपा। वों क्षेरी रा मां-वाप अर नौकर चाकर भी उए। वंगल मायं मूं वारे प्रायन्या। मुंडा उरए नै छोड'र भागग्या। वों छोरी नै उरए रा मां-वाप वग्ळ रे । । । से लेवग्या। माएक भी वों छोरी रे सार्ग उरए वंगल माय वड़ग्यी।

वी छोरी रो नाम नीलम हो । बी रो बापू पूछ्यो, ''बेटा, नीनृ वां ्रेडा रो चेरो प्रर गाभा सत्ता किसा भांत हा ।''

नीलम केयी, "डेडी म्हैन तो ठा ईज कोनी पड्यी।"

देवर में नीक्षम रो निजर माएक मार्थ गई। वा जोर मृंदेरी देशे भो छोरो नों होवतो तो भाज : ····। "दनरी देय'र डा रोडण वीं रो नाम माराक हो । स्रवं वो कठ है। म्हेंन तो कई ठा कोनी, बो बोवें या ·····?" इतरो केय'र वो छोरो डुस्क्या भरए नै लागग्यो।

वज्जू वीं नै पुचकारता थकां केथी, "देख, ग्राज मूं थारी नाम मीती लाल है। ग्रर थारे दूजें भाई रो भी महै पतो लगाऊंला। ग्रवं तूं रो मत ग्राज थारें खातर पाटो बस्तौ ल्या देवूंला ग्रर तन्ने स्कूल पढ्ण नै जावणं है।"

वो छोरो बज्जू री वात सुए। र डुस्क्यां भरती-भरती चुप होययो। ग्रर मन में राजी होय ग्यो।

परण घापो बोली, "म्हें तो इसा नै लाडलो ई केंबू लां। मुर्णो ताडती यापू, आज सू आपां इसा स्हेर नै छोड'र किसा ई दूर्ज रहेर में रैवांला अर उठें ई इसा नै स्कूल में पढसा-लिखसा सार भेडांता। क्यू क अठें इसा रो बाप या भूआ बखेड़ा घानेला।"

वज्जू रै माथै मांय घापो री ब्रा बात जचगी । ब्र<sup>र बो छौरी</sup> मन मायं घराौ ई राजी हयो ।

ग्रये वे वस्वई जेड़े वहै नगर मायं रैवए। नै

वीं स्हेर मांय वज्जू मोती नै एक

दियो । बज्जू स्नाप री पूँजी सूं वीं नगर

मोती रै कलक्टर वराने सूं धापो घर वज्जू फूल्या कोनी समावा है। वेटेरे बंगले मांय घ्राप रो बुढापो मुख सूंकाट रैया हा। पर्ना एक केत ! फाट्योड़ा गाभा । बच्द्योड़ी दाड़ी । चेरे मार्थ भुर्या पड्योडी एक भेनल,बी रै लारे वीं हाल में ई एक लृगाई घर तीन चार छोरी छोरा नागे हैं। कलक्टर मोती रैबंगले मांय वे जावरणी चावा हा। परा पेरे माडी सङ्गा



दर्शन कर र सहै चल्या । जांबाला इतरे मे बब्द की निवर निवरित्यक <sup>नेर्य</sup> मुगाई कानी गई। बब्दू सिपाइयां ने केयी, "बा न, मार पारणाइया ।

Sec. 450. 12

ने लागगो। नीलम रो बाप ग्रर मां नीलम नै पुचकार र चूप करी। श्रर वीं छोरै नै पूछ्यो, "बेटा तूं उसा लोगां रै चैरे ग्ररगाभालतां रै बारै में बताय सके है काई ?"

मारणक उरा नै सगळी वात बताय दी। अर वो आपर वार में भी बतायों। नीलम रो वाप उरा गुँडा नै पकड़ नै साह पुलिस बालो मार्ग टेलीफोन कर दी। अर नीलम रो वाप मारणक नै दस रुपया देवल नै लाग्यों तो नीलम री मम्मी केयों, "आज सूं श्री विना मां-वाप रो टींगर आपर्ण अठै रेवैलो अर नीलू रै सार्थ स्कूल जावेली आवेलों।" नीलम रो वाप मानन्यों।

श्रवं माराक उरा रें घर रो काम काज भी करें श्रर नीलम रें सार्ग पढरा लिखरा ने भीं जावें। पछे दिन-दिन उरा दोनां मायं हेत हो वरा ने लागग्यो।

माराक ग्रर मोती दोनूं एक स्हेर रै मायं रेवता थकां एक दूसरे मूं भवदे मिल कोनी सबया।

टेम बोतजी गयो । बीतती गयो । दौनू भाई एक दूर्ज शे सकत मृत्त भूलग्या । परा दोतूं ई पढ लिख'र । खाई. ऐ. एस. खर खाई. पी. एस. ई इमतिहान में पास होयग्या । खर नीलम भी खाई. ए. एस. में पास होयगे ।

श्रव मागुक एस. पी. वस्तुम्यो । नीसम कलक्टर बस्त भी । धर मीती भी कलक्टर बसम्बो । मोती रै कलक्टर बग्ग मैं मूं घाषो घर बज्जू फूल्या कोनी समावा हैं। बेटे रै बंग मैं मांय घाष रो बुडापो मुख मूं काट रैसा हा। पग एक कि। फाट्योड़ा गाभा। बघ्द्योड़ी दाड़ी। चेरे माथे फुर्यां पड्योड़ी एक निनस्त्री रै लारे बीं हाल में ई एक लुगाई घर तीन चार छोरी छोरा सागे हैं। कलक्टर माती रै बंग ने मांय वे जावग्री चावा हा। पग्र पेरे माथे खड्या विपाई सो मैं फिड्क रेंद बोल्या, "जाब्रो, अवार साब बंग ने में कोनी। बा



<sup>से दर्शन कर र म्है चल्या । जांवाला इतरे में वज्जू री निजर गिड़गिड़ावर्त <sup>भिनक्ष</sup> सुगाई कानी गई । वज्जू सिपाइयां नै केयी, "धां नं, मांय *धावराद्*यो ।</sup>

बड़ी स नार्डसर/१६

नै लागगी। नीलम रो बाप अर मां नीलम नै पुचकार र इप करी अर वीं छोरें नै पूछ्यों, "बेटा तूं उरा लोगां रै नैरे बरनाभाल रै बारें में बताय सके है काई ?"

माएक उए। नै सगळी बात बताय दी। अर बी ब्रापरें बारें में में बतायी। नीलम रो बाप उए। गुँडा नै पकड़ नै सार पुलिस घाए। मा टेलीफोन कर दी। अर नीलम रो बाप माएक नै दस रुपवा देवए। लाग्यों तो नीलम री मम्मी केयी, ''श्राज सूं श्रो बिना मां-बाप रो टीन श्रापर यें उर्दे रेवेलो अर नीलू रै सार्थ स्कूल जावेली श्रावेली।'' नीलम रं बाप मानग्यी।

अबै माराक उरा रै घर रो काम काज भी करें अर नीलम रै सामें सामें पढ़रा लिखरा ने भीं जाबें। पछै दिन-दिन उरा दोनां मायं हेत होवर ने लागयो।

माराक ग्रर मोती दोनूं एक स्हेर र मायं रेवता थकां एक दसर में के किंदी मिल कोनी सक्या।

देम बोतती गयो । बोतती गयो । दौनु भाई एक दूर्ज री सकत मूरि भूलग्या । परा दोनु ई पढ लिख'र । आई. ऐ. एस. अर आई. पी. एस. इमतिहान में पास होयग्या । अर नीलम भी आई. ए. एस. में पास होवगी ।

श्रवं मासक एस. पी. वसाग्वी । नीलम कलक्टर भी कलक्टर वसाग्वी । मोती मट उठ'र एस. पी. र साम गयो। इतर में धापो धर बज्जू, शेषु जर उसा र टावरा ने लेय'र बंगल र मांय बड़ाया।

वंगले रे बाग मार्थ माराक अर मोती दोन सरकार री कोई ऐडी वान में उठहरा क दोनूं दिन उने रे आठ नी बजे मूं इग्यारह बजे लाउँ बां

ये बात मुक्ती ईज कोनी । इतरें में लोलू नै नया गाभा पेराय 'र्रे मर्र नुर्देहीरे कप्य'र बजू बाग रै एक पेड़ नीचे बैठ'र बाता करए। गै सागयो ।

मोती श्रर एस. पी. माराक दोनू हांसता हांसता झाया। मोती रो निजर बजू कने नया गाभा पेरयोई झादमी मार्थ गई। एन. पी. माराक भी उठीन देखी।

मोती बोल्यो, "एस. पी. साब, ऐ म्हारा बापूजी है। बो, एम पी. रेगता ई बोल्यो "बज्जू दादा ?" बज्जू हक्को बक्को रेग्यो । एम पी रेगता ई बोल्यो "बज्जू दादा ?" बज्जू हक्को बक्को रेग्यो । एम पी रोल्यो, "बज्जू दादा, म्हे धारै लीजू रो बेटो हैं । बाई टा प्रवे म्हारी

बोप कर्ठ है ?" बज्जू पुटको लेव'र बोल्यो, "यारो एक मार्टमी हो । बो मौ कर्ठ है ? स्नाप एस. पी. हो उस रो भी पत्रो सराझो ।"

भन कठ हं ? भाग एस. पा. हा अल पा. "माई तो गांव में कठेई गोजा सावजो हुनैजा, पण बाड़ हुवा जुणहें नै नेप'र गया पछ महासे गुम-बुग हूं बोनी की 1" माणव बोर्गा ।

र पंच र गया पछ कहारा छुन्छ । सीलू माप र दोतूं होया न् साथी पक्त्योगों सीवी ही मीनी सहे सूडी किया दिसाऊँ किर दिया है है के किया । वो मिनल हाथ जोड़्योड़ो रोवती रोवती बोल्यो, "वज्जू, काका महैं यारी काळी गाय हूँ। तूं मनै माफ करदै। मैं कई जीवस ताई थारो उपकार कोनो उतार सकूला तूं मनै माफ करटे।"

वज्जू री बूढी ब्रांख्या पिछाएं नै में देर कोनी करी, "अर तीलू रे तूं जीवे हैं ?" वज्जू अचंवे सूं पूछूयो । लीलू केयो. 'दादा, म्हैन तो मर्षां ई कई वरस होयग्या । मना दुनिया में जीवएं रो कोई हक कोनी म्हें तो मर्योड़ी ई हूं । पए गांव गयो तो मने इए सगळी वातां रो ठा लाग्यो अर म्हें थारे उपकार ने म्हारो सोस नवावएं नै ब्रायों हैं । वस .....!'

मोती रात रै गाऊन में हाथ में ब्रखवार लियोड़ी बज्जू रैपर्गा लाग'र मूडै पर बैठता बका पूछ्यो "ऐ लोग क्रा है ?"

वज्जू बोल्यो, "बेटा, ऐ धन रा ध्रमी है।"

मोती प्रचरज मूं बोल्यो, ',धन रा धर्गी ?"

इतर में घापो साड़ी पेर्बीड़ो, चश्मो लगायोड़ी बाग में बाई।" बज्जू मुळक'र घापो नै बोल्बो, "धापू देख कुएा श्रायो है ?"

धापो केट मूं पिछागा'र बोली ''धरे लोलिया क**ँ** हो बेटा <sup>इता</sup> दिन ?''

लीतिया नाम मुख'र मोती रैं डील मायं बीजळी सी दौहगी। बी मगद्रा कानी भीचको मी देन रेयो हो। इतरैं में एक सिवाई मा<sup>बर</sup> को, ''साब ! एन. गो. माब ! प्रधार्या है।''

मोती भट उठ'र एस. पी. रैसामै गयो । इतरै में धापो झर बज्जु, ीतू बर उस रै टाबरा ने लेख'र बंगले रै मांय बड़ायों । किल्लाह बंगले रै बाग मार्थ मास्यक अर मोती दोंतू सरकार री कोई ऐड़ी

त में उठझ्या क दोनुं दिन उगे रै ब्राठ नी बजे सूर इग्यारह बर्ज ताई बार ो बात मुकी ईज कोनो । इतरै में लोतू नै नया गाभा पेराय रिक्सिर्विर लाप'र बज् बाग रै एक पेड़ नीचै बैठ'र बाता करएा नै लागयो ।

मोती त्रर एस. पी. माराक दोनूं हांसता हांसता ोतीरी निजर बजुकनी नया गाभा पेरयोड़ ग्रादमी मार्थ गई। सि. पी. मालक भी उठीनै देख्यो ।

मोती बोल्यो, "एस. पी. साव, ऐ म्हारा बापूजी है। बो, एस. पी. रेखता ई बोल्बो ''बज्जू दादा ?'' बज्जू हबको बक्को रैग्यो । एस. पी. बोल्यो, "वज्जू दादा, महें थारै कीजू रो बेटो हैं। काई ठा मर्ब महारो वाप कठै है ?"

दज्जू चुटको लेय'र बोल्यो, "घारो एक भाई भी हो । यो मेर्पै कर्ठ है ? म्राप एस. पी. हो उसा रो भी पतो लगाम्रो।"

"भाई तो गांव में कठैई गोता सावतो हुवैला, पण बारू दूत्री लुगाई र्ने लेप'र गया पर्छ म्हारी मुख-युव ई कोनी ली ।" माएक दोऱ्यो ।

लीलू ग्राप रै दोनूं हायां मू मायौ पकड्योटो सोचो हो

मों नै महें मूंडो कियां दिसाओं ? घर दियां देंदू दें हैं लागे

म्हें ई हूँ जिको दो हीरां री पारख कोनी कर सब्यो । ब्रर दर, दर री भीख मांगतो रेयौ ।

परा वज्जू वां दोनां ने श्राप रें छाती सूं चिपकार बोल्गो, <sup>15</sup> श्रो है थारों भाई माराक जिको श्राज कलक्टर बरायोड़ों थारी स खडयों है। श्रर श्रो है थां दोनं रो बाप लील।"

एक दोषी मिनख दायी लीलू खड्यो होय'र की केवती इतर में वे दे भाई लीलू रें पर्गार हाथ लगायो । लीलू वां ने छाती सू विपकाया

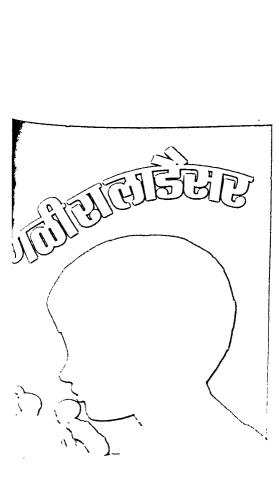
नाइ लालू र पगां रे हाथ लगायो । लीलू बां नै छाती सूं चिपकाया बांरो लाड करता थका लीलू री आंख्या सूं आंसू छळका हा । धाप अर लील री उन्हों कर है कि स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र

धापूत्रपर लीलू री दूजी लुगाई वां टावरां सागे दूर खड़ी ऐ सगई वातां देख रेवी ही। वजू धापी ने केयो, "खड़ी काई देखें हैं धन धरिएया रो हैं गवाड़िं

रो तो गेडियो है। ला म्हारो गेडियो ग्रर ग्रापा गांव चालां।"
पस वे सगळा वां रै क्यां प्रचार की स्थान की

पए वे सगळा वां रैं पगां पड़ग्या श्रर बोल्या, "मिनखा जूणी देविएियां देवी, देवता समान श्रवं थैं म्हारे जीवरण नै सूनो कर कोनो जाय सको । श्राज थैं दो श्राखर पढ़ाई रा नी कराया होता तो ऐ भला दिन देवरण नै कोनी मिलता।"

योल्पो, 'बेटा क्षा सगळी माया पटाई री है ।'' इतर में कलक्टर री कार मूं मागक नै लेवरा नै बायगी ।





जलम **जिल्ह**ा

रचनावा

## ग्रब्दल बहीद 'कमल'

- १७ अप्रेन १६३६ ई. नारसरो, ने. सम्दार शहर जि.चूर
- −एम ए की एट, —फिल्म राइटसं एसोजियसन बम्बई रा मदस्य
  - फिल्म''माटी री म्राला 'म्रापशे कहाग्गी पर बला'र त्यार (राजस्थानीम) -फिल्म 'गोगी ' आप री कहारती पर बसा रेबी है (राजस्थानीमे)
    - फिल्म''रम्म''ग्रर 'परायाधन' कहाणया पर हिन्दी में फिल्म वर्णने साह **ग्रन्द**चित

- दम का मिपाही (हिन्दी एकाकी नाटक) १६६४ ई.
- उकळती घरनी उफ्रणतो धामो (राजस्थानी कवितावा) १६८६ ई.
- —हाऊई रो घोरो (बाल राजस्थानी उपस्थम) १६८३ ई. गढीम नार्टमर (बाल राजस्थानी कहाण्या)१६८६ ई.
- रता,मर मगीन रा विजेष सेना विशिष्ट पीथुया माय छाया । '
- राजस्थानी माहित्व संस्कृति संस्थान 'विसंभक्त'रा संस्थापक ग्रंग मन्त्रि ।

